ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 97

सहयोग शुल्क : रु. 1 / फरवरी : 2025

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

महाकुंभ आस्था का प्रतीक है ।
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

महाकुंभ दुनिया को मैनेजमेन्ट के पाठ सीखाता है ।
– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

पूरा संसार आज भारत की ओर देख रहा है, प्रयागराज का महाकुंभ पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। महाकुंभ श्रद्धा और आस्था के प्रतीक के साथ साथ विश्व कक्षा के मैनेजमेन्ट का भी अभ्यास केन्द्र है । किसी छोटे से देश की जितनी आबादी हो उससे अधिक लोग इस महाकुंभ में अपनी श्रद्धा और आस्था के साथ मुलाकात लेते हैं। भारत वर्ष के सनातन धर्म की धरोहर को बलशाली बनाने का एक महत्वपूर्ण कार्य इस महाकुंभ के द्वारा हो रहा है। किसी एक राज्य के किसी जिले में एक ही जगह पर कोरोडों की संख्या में लोग अपनी श्रद्धा और आस्था की डुबकी लगाने आते हैं और स्वयं को पापों से मुक्त होकर पवित्र बनने की श्रद्धा के साथ जाते हैं। इतनी अधिक संख्या में आ रहे लोगों को नियंत्रित करना, उनके ठहरने, खाने, पीने और अन्य सुविधाओं का खयाल रखने का कार्य इतने सटीक तरीके से हो रहा है कि दुनिया के कई मैनेजमेन्ट संस्थान इसका अभ्यास करने इस महाकुंभ की मुलाकात ले रहे हैं । अगर हमारे घर में एक शादी हो और 300 लोगों को बुलाया हो तो उनके लिए व्यवस्था करने में हमारी कितनी उर्जा व्यय हो जाती है तो यह तो केवल अपनी श्रद्धा और आस्था के सहारे आनेवाले करोंडों लोगों की व्यवस्था करने का कार्य है इसमें कितनी उर्जा और कितना प्रबंधन करना पडता होगा यह सोचने वाली बात है। हम महाकुंभ के लिए वहाँ के प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थान, विभिन्न अखाडे, धार्मिक संस्थान, वहाँ के स्थानिय लोगो आदि का इस कार्य के लिए धन्यवाद करते हैं और अपना योगदान देनेवाले सभी लोगों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करते हैं।

दिव्यांग सेतु के इस अंक में हमने हिमकल्याणी की कहानी को स्थान दिया है जो अन्य कई लोगों के लिए प्रेरणामूर्ति है । एक शिक्षक और उसमें भी एक दिव्यांग शिक्षक बच्चों की शिक्षा के लिए कितना त्याग और बलिदान दे सकता है इसका श्रेष्ठ द्रष्टांत है हिमकल्याणी। अपने नाम को हिमकल्याणी ने सार्थक किया है । हम हिमकल्याणी और उसके जैसे अन्य कई लोग जो देश और दुनिया में जरुरतमंदों के लिए अपना योगदान देते हैं उनके प्रति अपना धन्यवाद और सम्मान प्रकट करते हुए आनंदित हो रहे हैं। समाज को इस प्रकार के लोगों की अधिक से अधिक आवश्यकता है।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

फरवरी : 2024, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-6 अंक : 97

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

इस टीचर की कहानी प्रेरणा देती है:

समाज कहता था- दिव्यांग है, कुछ नहीं कर सकती; फिर टीचर बनकर सवारा कई बच्चों का भविष्य, कोरोनाकाल में 14 किमी रोज सफर कर पढ़ाया कुछ करने का जज्बा हो तो हर राह आसान हो जाती है। बस इरादों में दम होनी चाहिए फिर आपकी कमजोरी भी आपकी ताकत बन जाती है। यह साबित कर दिखाया है, बेमेतरा की हिमकल्याणी सिन्हा ने । हिमकल्याणी बेमेतरा जिले के सैगोना गांव की शासकीय प्राथमिक शाला में सहायक शिक्षक हैं । बचपन से ही पोलियो की वजह से कमर से नीचे का हिस्सा विकसित नहीं हुआ। वे कभी अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो पाईं। समाज के लोग यही कहते थे कि दिव्यांग है, यह आगे कुछ नहीं कर सकती । वे आज न सिर्फ अपने पैरों पर खड़ी हैं, बल्कि सैकड़ों बच्चों की जिंदगी सवार रही हैं, उन्हें काबिल बना रही हैं ।

हिमकल्याणी बहरा गांव में परिवार के साथ रहती हैं । इनका जिम्मा था सैगोना गांव के स्कूल के बच्चों को पढ़ाने का । कोविड के दौरान में जब स्कूल बंद हो गए, तब सरकार ने मोहल्ला क्लासेस शुरू कर दीं। गांव में संक्रमण के खतरे को देखते हुए मोहल्ला क्लासेस नहीं लगाई जा सकीं। दूसरी तरफ विकल्प ऑनलाइन क्लास का था, मगर बच्चे गरीब परिवार से थे, ना फोन की सुविधा थी ना ही उनके पास इंटरनेट कनेक्शन। ऐसे में हिमकल्याणी ने देखा कि बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है ।

बच्चों की पढ़ाई न छूटे इसलिए वे हर रोज अपने घर से 14 किलोमीटर दूर का सफर तय कर बच्चों के गांव पहुंचने लगीं । अपने स्कूटर के जरिए हिमकल्याणी ने घर-घर जाकर बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। बच्चे अपनी चौखट में रहते थे और हिमकल्याणी उन्हें होम वर्क और क्लास वर्क समझाया करती थीं । इसके बाद वो अलगे घर की ओर बढ़ जाती थीं। इस तरह गांव के हर घर जाकर सैकड़ों बच्चों को हिमकल्याणी ने कोविड-19 के संकट काल के दौरान पढ़ाया ।

अपना सफर बताकर स्टूडेंट्स को करती है

बच्चों से मुलाकात के दौरान अपनी कहानी के जरिए बच्चों को मोटिवेट करती हैं। वह बताती हैं कि पोलियो की वजह से वह घुटनों के बल पर चल पाती हैं, इसके बाद भी उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की और टीचर बनकर अपना सपना पूरा किया। वह बच्चों से कहती हैं कि जब वह घुटनों के बल चल कर अपना यह सपना पूरा कर सकती हैं तो सामान्य रूप से हर व्यक्ति खुद को काबिल बना कर अपने सपने को पा सकता है। इसके अलावा कई रचनात्मक गीतों और आर्ट वर्क के जरिए हिमकल्याणी बच्चों को रोचक ढंग से पढ़ाने का काम कर रही हैं।

भुवन लाल साहू हिमकल्याणी सिन्हा

हिमकल्याणी सिन्हा बचपन से कभी चल नहीं पायीं, पर कभी अपनी कमजोरी को अपने कार्य में बाधा नहीं बनने दिया। वे ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करती हैं।

तीन साल पहले की बात है, जब पूरी दुनिया में कोरोना महामारी का कोहराम मचा था, स्कूल बंद हो गए थे, और बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही थी। तब हिमकल्याणी सिन्हा ने कोरोना गाइडलांइस का पालन करते हुए, गाँव में जाकर पालक-बालक सम्पर्क किया। गाँव के पढ़े लिखें युवाओं को बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक किया. स्वयं के व्यय से गाँव में मास्क और सैनेटाइजर का वितरण किया। गाँव में उचित जगह का चुनाव करके बच्चों को नियमित मुहल्ला क्लास प्रदान किया। शिक्षा सचिव ने विभाग की पूरी टीम के साथ मुहल्ला क्लास का निरीक्षण भी किया। गाँव के काजल सिन्हा और मोना गंधर्व, शिक्षा सारथी के रूप में बच्चों की शिक्षा में सहयोग प्रदान करते थे. कोरोना का प्रकोप अत्यधिक बढ़ने पर मुहल्ला क्लास बंद हो गए। तब ऑनलाइन क्लास के माध्यम से बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखा। सैगोना ही नहीं बल्कि अपने निजि निवास बहेरा में भी

हिमकल्याणी जी ने बच्चों को ऑफलाइन क्लास में जोड़े रखा। इस दौरान छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के शिक्षक और बच्चों के साथ मिलकर कार्य किया।

कबाड़ से जुगाड़ करके अनेक टी.एल.एम. खिलौनो का निर्माण किया, जिनका वे नियमित रूप से कक्षा में उपयोग करती हैं. पी.एल.सी. के अंतर्गत तीन बिग बुक निर्माण किया है। आमाराइट प्रोजेक्ट पर कार्य किया। आर्गमेटेड रियालिटी से बच्चों का आभासी दुनिया से परिचय कराया। कई जन जागरूकता प्रेरणा गीतों की स्वयं रचना की और स्वर भी दिया। वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण आदि में भी वे सहभागिता देती हैं।

रुचिकर नवाचारी गतिविधियों का प्रदर्शन वे लगातार करती हैं। अलाउन्स पब्लिक स्कूल बेमेतरा में कबाड़ से जुगाड़ का प्रदर्शन किया। जिला स्तरीय टी.एल.एम. मेले में प्रदर्शन किया। समग्र शिक्षा कार्यालय से अनुभव शेयरिंग कार्यक्रम में दुर्ग संभाग से प्रतिभागी रहीं. वे पॉडकास्ट वीडियो भी बनाती हैं, जिससे हिंदी कहानी का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद कर प्रस्तुत करती हैं।

भाषा उत्सव के अंतर्गत बहुभाषावाद को प्रोत्साहित करने हेतु बच्चों के साथ उड़िया भाषा की अच्छी जानकारी रखने वाली सागरिका यादव और महाराष्ट्र, पुणे से लाला साहेब लक्ष्मण जाधव व वहाँ की शिक्षिका से मराठी भाषा में संवाद किया। हिमकल्याणी सिन्हा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करती हैं। आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को पढ़ाई लिखाई में सहयोग करती हैं। विभिन्न त्यौहार बच्चों के साथ मनाती हैं, जिससे बच्चें अपनी संस्कृति और परम्परा से परिचित होते हैं। इनकी शाला के बच्चे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, निबंध लेखन, चित्र कला आदि में भाग लेते हैं और जीत भी हासिल करते हैं। बच्चों की कई रचनाएँ किलोल बाल पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं। हिमकल्याणी समय समय पर टाई बेल्ट, कॉपी पेन, कम्पास बॉक्स, आदि प्रदान कर भी बच्चों को प्रोत्साहित करती हैं।

हिमकल्याणी जी ने स्वयं के व्यय से ग्रीनमेंट प्रदान किया है। कक्षा में टाइल्स लगवाई हैं, खिलौना

कार्नर लगवाया है, शाला को स्मार्ट शाला बनाने हेतु भी यथा संभव सहयोग किया है। हिमकल्याणी सिन्हा के कार्यों को शिक्षा के गोठ में स्थान मिला था। पढ़ई तुंहर दुवार पोर्टल पर दो बार हमारे नायक का स्थान मिला है। समग्र शिक्षा राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा खिलौना निर्माण पुस्तिका में इनके खिलौना - गुल्लक को स्थान मिला है। साहित्य शोध मंथन द्वारा प्रकाशित पर्यावरण संरक्षण समय की मांग पुस्तिका में इनकी रचना को स्थान मिला है। बाल पत्रिका किलोल में इनकी कई रचनाओं को स्थान मिला है. नेशनल टीचर्स क्रियेटिव फोरम द्वारा हमारे नायक में सम्मानित हुई हैं। बाल रक्षक प्रतिष्ठान महाराष्ट्र और शिक्षा कला साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित हुई हैं।

हिमकल्याणी शिक्षा के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। कोरोना काल में कोरेन्टाइन सेंटरो में स्वयं जाकर प्रवासी मजदूरों के लिए दैनिक जरूरतों की सामग्री पहुँचाती थीं। गाँव में जरूरतमंदो के दरवाज़े तक जाकर मदद करती थीं। स्वयं रक्तदान करते हुए औरो को भी रक्तदान हेतू प्रेरित करती हैं, अपने जिले के साथ ही दूसरे जिले के जरुरतमंदो को भी मदद पहुंचाने का पूरा प्रयास करती हैं। इनके कार्यों को यूट्यूब लिंक और फेसबुक पेज पर देखा जा सकता है।

पहले उपके पापा ही ग्राम बहेरा से सैगोना तक स्कूल छोड़ने और लेने जाया करते थे। चार साल पहले उन्होने स्कूटी खरीदी और उसे मॉडिफाई करवाकर ट्राई साईकिल में तब्दील करवाया। अब अपनी स्कूटी से प्रतिदिन 14 किलोमीटर का सफर वे स्व यं तय करती हैं। पिछले 17 साल से वे बच्चों के जीवन को संवारने में तन-मन-धन से जुटी हैं।

हिमकल्याणी ने न सिर्फ अपने परिवार का अपितु गाँव, जिले और राज्य का नाम रोशन किया है। बिना किसी का सहयोग लिए खुद ही सारे कार्य करती हैं। सहज और सौम्य हिमकल्याणी के कार्यों ने अनेक शिक्षकों, विद्यार्थियों, समाजसेवियों और गणमान्य नागरिकों को प्रेरित किया है. उनके जीवन

का एक ही लक्ष्य है - अच्छे वातावरण में बच्चों नई नई तकनीक से पढ़ाती रहें।

75% दिव्यांगता के बावजूद विशेष योगदान

हिमकल्याणी सिन्हा, जो 75% दिव्यांगता के बावजूद शिक्षण क्षेत्र में अपनी अद्वितीय सेवा के लिए पहचानी जाती हैं। उन्होंने कोरोना काल के दौरान कठिनाइयों का सामना करते हुए बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखा। ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों माध्यमों से शिक्षा प्रदान करते हुए, उन्होंने बच्चों को न सिर्फ पढ़ाई से जोड़ा बल्कि उनके अंदर आत्मविश्वास भी जगाया।

उपयोगहीन वस्तुओं से बनाती हैं शिक्षण सामग्री

सिन्हा ने शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार किए हैं। उन्होंने उपयोगहीन वस्तुओं से सहायक शिक्षण सामग्री बनाई, जिसे कक्षा में नियमित रूप से इस्तेमाल किया जाता है। साथ ही, उन्होंने खुद की रचना की हुई कहानियों, कविताओं, और गीतों के माध्यम से बच्चों को शिक्षा प्रदान की है। इसके अलावा दिव्यांग और अनाथ बच्चों की पढ़ाई में मदद करती हैं।

सम्मान में मिली राशि से हिम कल्याणी ने सैगोना स्कूल को भेंट किया स्मार्ट टीवी

शासकीय प्राथमिक शाला अकोला में शिक्षिका हिमकल्याणी सिन्हा ने अपने पुर्व शासकीय प्राथमिक शाला सैगोना में 43 इंच का एनरॉइड स्मार्ट टीवी भेंट की। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले के शासकीय प्राथमिक शाला अकोला की शिक्षिका हिमकल्याणी सिन्हा ने अपने पुर्व शासकीय प्राथमिक शाला सैगोना में 43 इंच का एनरॉइड स्मार्ट टीवी भेंट की। जिसकी कीमत 12 हजार 8 सौ रुपए बताई जा रही है। उल्लेखनीय है कि, नवाचारी शिक्षिका हिमकल्याणी सिन्हा 17 वर्ष तक शासकीय प्राथमिक शाला सैगोना में सहायक शिक्षक के पद पर पदस्थ थी। वर्तमान में 16 अगस्त 2024 से साजा विकास खंड के शासकीय प्राथमिक शाला अकोला में प्रधान पाठक के पद पर कार्यभार ग्रहण की है।

बच्चों के अंदर डिजिटल सोच पैदा करें

5 सितंबर 2024 को छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन

डेका और मुख्यमंत्री विष्णु देवसाय के हाथों राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित हुई है। जिसमें 21 हजार का चेक मिला है। शिक्षिका हिम कल्याणी सिन्हा पहले ही शाला को टीवी देने की सोच रखी थी। बच्चों के अंदर डिजिटल सोच पैदा करने, शिक्षा में गुणवत्ता लाने, बच्चों को मनोरंजक तरीके से पढ़ाने, भाषा कौशल विकास को बढ़ावा देने, दृश्य सोच और कल्पना शक्ति में विकास करने के उद्देश्य से शाला को टीवी प्रदान की। इससे बच्चों को चित्रात्मक कहानी, अभिनय, क्राप्ट वर्क, रंगों की पहचान करना, दार्शनिक पर्यटक स्थलों को देखना, जानवरों को देखकर पहचान करना, जैसे कई मनोरंजक गतिविधि से जोड़ सकते है।

नवाचारी शिक्षिका हिमकल्याणी सिन्हा ने पहले भी स्वयं के व्यय से प्राथमिक शाला सैगोना में तीन नग ग्रीन मेट ली है । कक्षा में टाइल्स लगवाई है, खिलौना कार्नर बनवाई है, स्मार्ट शाला के लिए 10 हजार तक की नगद राशि की सहयोग की है। शिक्षिका पुरस्कार के बचे राशि को भी शाला विकास कार्य में खर्च करने की बात कही है। शिक्षिका सभी बच्चों से मुलाक़ात कर उन्हें मिठाई खिलाई।

शिक्षिका के कार्यों की सराहना

इस मौके पर शासकीय प्राथमिक शाला सैगोना के प्रधान पाठक लेखराम वर्मा, सीएसी पवन साहू, पीरेंद्र वर्मा, नीमा वर्मा, लक्ष्मीन सिन्हा, सुनीता

वर्मा, सुरेश वर्मा, जितेंद्र वर्मा, घनश्याम वर्मा, उत्तम वर्मा सभी उपस्थित रहे थे। शिक्षिका की कार्य की सराहना करते हुए शाला को टीवी प्रदान करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिमकल्याणी को मिले प्रमुख सम्मान

१. कोरोना योद्धा सम्मान

२. उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान

३. मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण शिक्षा दूत सम्मान

4. Best Teacher अवार्ड

५. पढ़ई तुहर दवार उत्कृष्ट शिक्षा योगदान सम्मान

६. सावित्री बाई फूले सम्मान

७. सृजनशील शिक्षक सम्मान

८. अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मान

★★★

सद्गुरु ॐऋषि स्वामी की पावन उपस्थिति में ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा आयोजित १०वां पतंग महोत्सव

दिव्यांगजनों के लिए आयोजित इस पतंगोत्सव के कार्यक्रम में ९०० से अधिक दिव्यांगों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया था । ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा हर दिव्यांग को पतंग, फिरकी (मांजा), चश्मा, चिक्की का वितरण किया गया था । दिव्यांगों के लिए मेजिक शो के साथ साथ अन्य कई खेलों का भी आयोजन किया गया था । कार्यक्रम में ओमकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के स्वयंसेवकों ने दिव्यांगों को डी.जे के ताल पर खूब नचाया और मौज करवायी थी । पतंग उडाने के साथ साथ दिव्यांगों ने खाने का भी भरपूर आनंद उठाया था ।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के लिए गणतंत्र दिवस उत्सव और खेलों का आयोजन हुआ

२६ जनवरी गणतंत्र दिन के उपलक्ष्य में मनोदिव्यांग बच्चों के लिए ध्वजवंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया था. राष्ट्रवंदना कार्यक्रम के बाद बच्चों के लिए खेलों का आयोजन किया गया था. खेल स्पर्धा में ७० से अधिक बच्चों ने हिस्सा लिया था. मनोदिव्यांग बच्चों के खेलों के आयोजन के लिए बोर्न एथ्लेट स्पोर्ट्स एकेडमी के स्पेशियल टीचर को बुलाया गया था। बच्चों को बोर्न थ्रो, सोफ्ट बोल थ्रो, ५० मीटर दौड, १०० मीटर दौड, जंपींग जैसे विभिन्न खेलों को खेलने का अवसर मिला था. खेल प्रतियोगिता में प्रतिभागी सभी बच्चों को प्रमाणपत्र भी दिए गए थे. कार्यक्रम के बाद बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई थी. सभी बच्चों ने खेल और भोजन का भरपूर आनंद उठाया था।

मनोदिव्यांग छात्रों ने पतंग उड़ाकर मनाया मकरसक्रांति पर्व

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के मनोदिव्यांग छात्रों ने पतंग उड़ाकर मकरसक्रांति का पर्व मनाया । मकरसक्रांति का पर्व उनके लिए केवल पतंग उडाकर सीमित नहीं था, साथ ही उन्होंने रंगबिरंगी अनेक पतंगों के साथ साथ अपे अरमान और इच्छाओं को भी पतंग की डोर से बांधकर आकाश छूने की कोशिश की । पतंग के साथ साथ उन्होंने मन भरकर चिक्की, उंधियुं और पूरी भी खाये थे । कई छात्रों ने केवल पतंग ही नहीं उडाई थी पर साथ साथ अन्य पतंगबाजों की पतंगों के साथ पेच लगाकर उनकी पतंगे काटने का आनंद भी उठाया । अपनी सारी मर्यादाओं को उन्होंने कटी हुई पतंग की भांति छोड दिया और इस महापर्व का आनंद उठाया ।

तनक के जन्मदिन पर १०० बच्चों को भोजन और उपहार

१८ जनवरी की शाम को छः बजे गायत्री विकलांग मानव मंडल संस्था के प्रांगण में कुमारी तनक का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया था । इस जन्मदिन के उपलक्ष्य में संस्था के १०० से अधिक बच्चों को भोजन करवाया गया था ।स्कूल में पढ़ रहे बच्चों को नोटबुक का कीट देकर एक अनोखा उपहार दिया गया था । भोजन, प्रसाद और उपहार पाकर सभी बच्चें आनंदित हो गये थे । बच्चों को शिक्षा का महत्व समझाते हुए बताया गया कि सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा पाकर अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहिए । बच्चों ने अपने जन्मदिन में सम्मिलित करने पर कुमारी तनक को जन्मदिन की बधाई के साथ साथा इश्वर से उनके स्वस्थ और खुशहाल जीवन के लिए प्रार्थना की थी । तनक बेन जीओ हजारों साल...साल केदिन हो एक हजार जैसे गाने गाकर उनके जन्मदिन के अवसर को यादगार बना दिया था । कार्यक्रम में उपस्थित बुजुर्गों ने तनक को उनके अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाल जीवन के लिए आशीर्वाद दिए थे । अगर अन्य सभी लोग अपने जन्मदिन के अवसर पर इन जरुरतमंद बच्चों के साथ अपने जन्मदिन को मनायें और उनके जीवन में खुशी और रंग भरेंगे तो इश्वर का आशीर्वाद उन्हें हमेशा मिलेगा ।

पतंग होटल में मनोदिव्यांग बच्चों के लिए भोजन

अहमदाबाद शहर की आन-बान-शान और पहचान जैसी पतंग होटल में स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबारनगर वाडज के मनोदिव्यांग बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। होटल में इतनी ऊंचाई पर जाकर सभी बच्चें बहुत खुश हो गये थे। होटल में बच्चों को सुंदर और स्वादिष्ट भोजन और साथ ही उपहार दिए गये थे। होटल मैनेजेमेन्ट के द्वारा मनोदिव्यांग बच्चों के लिए आयोजित इस कार्यक्रम के कारण कई बच्चों ने पहली बार इतना अच्छा होटल देखा था और स्वादिष्ट भोजन किया था। बच्चों के लिए किए गए इस आयोजन के लिए संस्था ने पतंग होटल मैनेजमेन्ट का धन्यवाद किया था।

मनोदिव्यांग बच्चों ने मनाया गणतंत्र दिवस

मनोदिव्यांग बच्चों के लिए कार्यरत स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबारनगर नवा वाडज के मनोदिव्यांग छात्रों ने ७६ वें गणतंत्र दिवस की हर्षोल्लास के साथ मनाया । कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों को गणतंत्र दिवस के बारे में और उसके महत्व के बारे में जानकारी दी गई साथ ही देश की स्वतंत्रता के लिए जिव शहीदों ने अपना बलिदान दिया था उन्हें याद कर उनका सम्मान किया गया था । बच्चों ने राष्ट्रवंदना कार्यक्रम में राष्ट्रगीत गाया था । राष्ट्रध्वज को सलामी देकर सभी बच्चें बहुत उत्साहित नजर आ रहे थे ।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर